CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received	Reviewed	Accepted
18.02.2023	26.02.2023	18.03.2023

कोटा शहर और नगरीकरण की समस्या (एक भौगोलिक विश्लेषण)

* डॉ. हनीफ खान
** प्रियंका पंवार

मुख्य शब्द - *नगरीकरण, जनसंख्या, साक्षरता, लिंगानुपात, उद्योग आदि.*

शोध सार

कोटा शहर में ना केवल शिक्षा का स्तर बढ़ रहा हैं बल्कि उसके साथ – साथ जनसंख्या वृद्धि भी लगातार बढ़ रही हैं जिसने शहर में नगरीकरण की समस्या को जन्म दिया हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शिक्षा की नगरी कोटा शहर के नगरीकरण की समस्या पर प्रकाश डालने का प्रयास किया हैं जिसमें उसने कोटा शहर की स्थिति (वर्तमान व भूतकाल) दोनों को बताकर शहर की समस्या को उजागर किया हैं।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के सतत् विकास के लिए विभिन्न कालों में नगर सभ्यता, संस्कृति, व्यापार के ठिकाने तथा उत्पादन के केन्द्र हैं। शहर घनी आबादी वाले क्षेत्र होते है जहाँ भिन्न–भिन्न व्यवसाय तथा कौशल एवं जलीय तथा सामाजिक संरचना वाले लोग एक साथ निवास करते हैं। वास्तव में विभिन्न कार्यों की विभिन्नता हमेशा से ही हमारे नगरों की पहचान रही है जिनसे नए विचारों को बढ़ावा मिलता हैं किंतु उसके साथ ही समावेशी निष्पक्षता तथा न्याय सम्बन्धी चुनौतियाँ भी जुड़ी रहती है। शहरों की एक विशेषता यह भी हैं कि वे अलग–थलग भी नहीं होते हैं और एक दूसरे से जुड़े भी रहती हैं जिनसे शहरी प्रणाली का विकास होता हैं। शहरी क्रम के निचले स्तर ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक जुड़े होते हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन छोटे शहरों से बड़े शहरों में प्रत्येक स्तर पर होता हैं।

विज्ञान एवं तकनीकी के विकास के परिणामस्वरूप गत अनेक वर्षों से यह प्रश्न हर किसी के मस्तिष्क में हैं कि हम स्मार्ट जीवन–शैली कैसे जी सकते है और कैसे उसका लाभ प्राप्त कर सकते है। तीव्र गति से बढ़ती शहरी सुविधाओं ने लोगों को बड़े स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन के लिए विवश कर दिया हैं। इसके फलस्वरूप ऊर्जा, परिवहन, जल, आवास, शिक्षा, व्यवसाय, सार्वजनिक स्थान आदि पर बड़ा दबाव पड़ा है। इन सभी समस्याओं का हल तलाशने के लिए नीति निर्माणकर्ता अनेक समाधान तथा साधन तलाशने का पूरा प्रयास कर रहे है यही कारण हैं कि स्मार्ट शहर जैसे नवीन विचारों एवं उपायों की वर्तमान में अधिक से अधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही हैं जो एक ओर तो सक्षम संवाहनीय होंगे और दूसरी ओर आर्थिक समृद्धि तथा सामाजिक कल्याण के कारक भी बनेंगे।

कोटा नगर–परिचय

कोटा शहर वर्तमान में न केवल प्रदेश में बल्कि पूरे देश में शैक्षणिक नगरी के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है। यहाँ देश के कोन–कोने से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग के लिए विशेष रूप से मेडिकल एवं इंजिनियरिंग प्रवेश की परीक्षाओं के लिए छात्र प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में आते हैं। अतः न केवल कोटा शहर के निवासियों बल्कि देश के विभिन्न स्थानों से आने वाले कोचिंग छात्र–छात्राओं के लिए आवश्यक शहरी सुविधाएँ उपलब्ध कराने और जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि हेतु विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जा रहे है। यहीं कारण हैं कि शहर में नागरिकों के लिए लगातार सुविधाओं में हो रही वृद्धि के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के साथ ही नगरीकरण की प्रवृत्ति भी बढ़ रही हैं।

नगरीकरण की अवधारणा

सामान्य शब्दों में शहरी क्षेत्रों में तीव्र गति से नगरीय जनसंख्या एवं नगरीय क्षेत्र आदि का विस्तार शहरीकरण कहलाता हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की परिभाषा के अनुसार 'ग्रामीण' क्षेत्र के लोगों का शहरों में जाकर रहना और काम करना 'शहरीकरण' हैं। वर्तमान समय में नगरों में जनसंख्या का तीव्र गति से बढ़ना तथा नगरों की संख्या में लगातार हो रहीं वृद्धि वर्तमान युग का महत्वपूर्ण तथ्य हैं। अने विद्धानों के अनुसार नगर पृथ्वी पर 5000 से 6000 वर्ष पूर्व देखने में आए। इसलिए कहा जा सकता हैं कि पृथ्वी पर नगरों का इतिहास बहुत प्राचीन हैं। प्रारम्भिक इतिहास में नगरीकरण की गति बहुत धीमी रही। सामान्य शब्दों में कहें तो नगरीय विकास, विकास की प्रक्रिया का ही एक अंग हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या का नगरीय क्षेत्रों में पलायन आर्थिक विकास की कसौटी हैं। पिछड़े हुए स्थिर समाजों में नगरीकरण की प्रक्रिया वस्तुतः धीमी होती हैं क्योंकि वहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार पाने के उद्देश्य से ही होता है और इस स्थिति में यह पलायन तब और तेज हो जाता हैं जब पंजी गहन उद्योगों की बजाए श्रम गहन उद्योगों पर बल दिया जाता हैं।

नगरीकरण की प्रमुख परिभाषाएँ

वी.एल.एस. प्रकाशराय के अनुसार – नगरीकरण एक प्रक्रिया के रूप में एकल केन्द्र अथवा बहुनाभिकीय केन्द्र के चारों ओर गैर कृषिगत गतिविधियों व भूमि उपयोग का केन्द्रीकरण हैं। प्रकाशराव के अनुसार नगरीकरण जनसंख्या के ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रों को प्रवास करने के परिणामस्वरूप घटित होता हैं। प्रकाशराव के अनुसार यह नगरीय क्षेत्र पास के ग्रामीण क्षेत्रों पर निर्भर रहता हैं तथा परिवहन एवं संचार साधन चिकित्सकीय के द्वारा यह ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा करते हैं।

कोटा शहर की भौगोलिक पृष्ठभूमि

कोटा शहर शैक्षणिक, औद्योगिक व पर्यटन नगरी के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुका हैं। कोटा चम्बल नदी के तट पर 25011' उत्तरी अक्षांश एवं 75051' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। सम्रुद तट से इस शहर की ऊँचाई 253.3 मीटर है। कोटा शहर की भौगोलिक स्थिति देश के मध्य में हैं जिसमें देश के अनेक शहरों में आवागमन की पहुँच सुलभ हैं। कोटा नगर जयपुर के साथ ही देश के महानगरों दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई व कोलकाता से रेल्वे की बड़ी लाईन द्वारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखता हैं।

साथ ही दिल्ली–मुम्बई रेल्वे लाईन पर प्रमुख बड़ा जंक्शन उपलब्ध करवाना हैं राज्य की राजधानी जयपुर से इसकी दूरी 240 किलोमीटर हैं। प्रशासनिक दृष्टि से भी कोटा शहर में हाड़ौती सम्भाग एवं साथ ही जिले का मुख्याजय भी यहीं पर स्थित हैं। दिल्ली से 470 किलोमीटर, मुम्बई से 920 किलोमीटर, जयपुर से 240 किलोमीटर, बून्दी से 35 किलोमीटर, झालावाड़ से 85 किलोमीटर, बाराँ से 73 किलोमीटर तथा रावतभाटा से 50 किलोमीटर दूर स्थित हैं

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

महाराव उम्मेदसिंह के निधन के पश्चात् 1940 में कोटा के नए नरेश महाराव भीमसिंह सिंहासन पर विराजमान हुए। इनके समय की सर्वप्रमुख घटना 1948 में कोटा का राजस्थान में विलय थी कालान्तर में ये राज्य के उपराज्यपाल पद पर भी रहे।

राजस्थान में विलय के पश्चात् कोटा ने तीव्र रूप से प्रगति की हैं जिसका मुख्य कारण यहाँ बहने वाली सदानीरा चम्बल नदी है। इस स्वतंत्रता के पश्चात् बड़े बाँध बनाए गए जिनके पेयजल, सिंचाई, उद्योगों, बिजली निर्माण आदि के लिए जल की उपलब्धता, सुनिश्चित हो सकी तथा साथ ही नगरीकरण ने अपने पैर तीव्र गति से जमा लिए जिससे यह राज्य में नगरीकरण में जयपुर के बाद दूसरे स्थान पर आ गया।0

शोध अध्ययन का महत्व

नगरीय क्षेत्रों में बढ़ती आर्थिक सक्रियता नगरीकरण का प्रारम्भ से ही चोली दामन का साथ रहा है। बेहतर रोजगार एवं आजीविकस की खोज में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय केन्द्रो की ओर बड़े पैमाने पर नगरों में आर्थिक गतिविधियों की तीव्र गति के कारण पलायन एक सतत् प्रक्रिया रहीं हैं। देश में अनेक ऐसे नगर है जो वर्तमान में किसी मूल योजना के बिना अनियोजित विकास होने के कारण प्रतिकूल प्रभावों से जूझ रहे हैं।

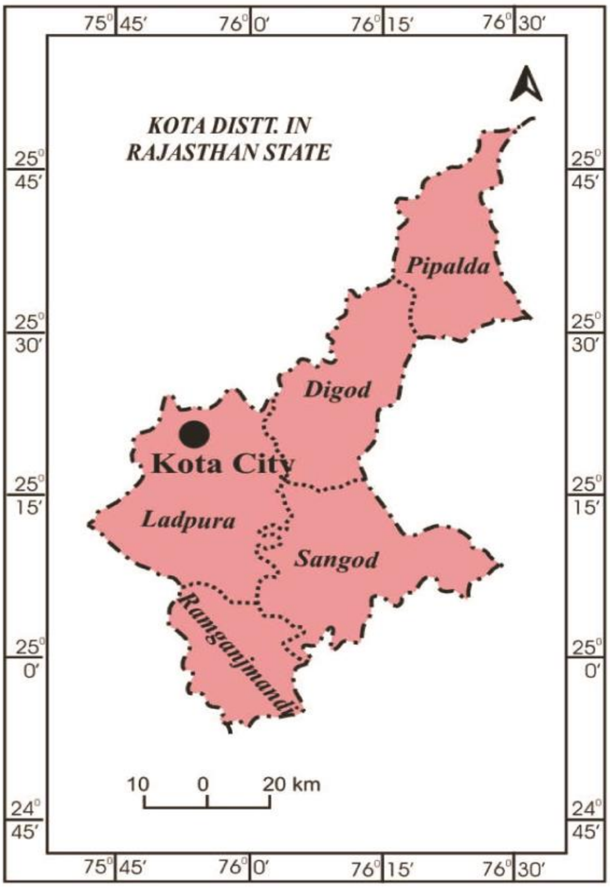

शहरों में जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण के कारण शहरों की समस्याऐं उसी अनुपात में बढ़ रही है जिस समस्याओं का समाधान परम्परागत तरीके से ना करके स्मार्ट समाधानों से किया जाता हैं। भारत के ज्यादातर शहर अनियोजित तरीके से फैले हुए हैं। भारतीय शहरों के अनुसार स्मार्ट सिटी की मूल अवधारणा ही उन शहरों को सुनियोजित तरीके से पुनः स्थापित करना हैं। उसी संदर्भ में कोटा नगर की स्थापना चम्बल नदी के किनारे मध्य काल में हुयीं थी जब यहाँ कुछ लुटेरों की बस्ती हुआ करती थी। जिनकों विजित करके कोट्या भी ने अपने नाम पर कोटा को बसाया। कोटा नगर अपनी स्थापना के समय से ही चम्बल के उत्तर किनारे दक्षिण की तरफ दायें किनारे पर विकसित हुआ और लगभग 800 साल तक उसी रूप में चलता रहा। वर्तमान में दक्षिण में मुकुन्दरा की वन भूमि के कारण विस्तार रूक गया। पश्चिम में बून्दी शहर हैं एवं पूर्व में कोटा का विस्तार जारी हैं क्योंकि यहा समतल भूमि हैं और कोई प्राकृतिक अवरोध नहीं है। सन् 2000 के बाद कोटा शहर में कोचिंग इंडस्ट्री की स्थापना के बाद कोटा शहर सेवा क्षेत्र में नाम कमाने के साथ–साथ यह आर्थिक रूप से भी मजबूत हुआ। पूर्व में यह आर्थिक सुदृढ़ता उद्योगों के कारण थी वर्तमान में इनका स्थान कोचिंग व्यवसाय ने ले लिया हैं।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. कोटा शहर के ऐतिहासिक परिदृश्य के आलोक में जनसंख्या उसकी वृद्धि, वितरण, घनत्व, जनांकिकी संरचना आदि का आकलन करना;
2. बढ़ते नगरीकरण के कारण विभिन्न प्रकार के परिवहन विकल्पों परिहनोन्मुखी विकास, सार्वजनिक परिवहन और अंतिम दूरी पैरा परिवहन कनेक्टीविटी को बढ़ावा देने सम्बन्धी अध्ययन
3. कोटा शहर में बढ़ते नगरीकरण में अवस्थापनाओं और सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए क्षेत्र आधारित विकास के लिए स्मार्ट समाधानों को प्रयुक्त करना

4. नगरीकरण के संदर्भ में कोटा शहर में अवस्थित कच्ची बस्तियों का भौगोलिक दृष्टि से वितरण, स्थिति समस्याओं आदि का आधार एवं विश्लेषणय

कोटा शहर की जनसांख्यिकी संरचना

कोटा शहर जनसांख्यिकी वर्णन जनगणना 2011, नगर विकास न्यास कोटा तथा नगर निगम कोटा द्वारा प्राप्त आँकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है।

जनसंख्या (Population)

भारतीय जनगणना 1901 के अनुसार कोटा शहर की कुल जनसंख्या 33,657 थी, जो आने वाले वर्षो में सतत् बढ़ती हुई सन् 2011 में 10,01,365 तक पहुँच गई।

क्र. सं		नगरीय जनसंख्या	पुरूष	महिला	वृद्धि दर 2001–2011
1.	भारत	37,71,760	19,58,196	12,98,564	31.80%
2.	राजस्थान	1,70,80,776	89,39,204	81,41,572	29.26%
3.	जिला कोटा	11,76,205	6,21,222	5,54,983	23.40%
4.	कोटा शहर	10,01,365	5,29,795	4,71,570	44.22%

जनसंख्या वृद्धि दर (Population Growth)

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर
1991	5,37,371	1,79,130	50.00
2001	69,21,316	1,56,945	29.21
2011	10,01,365	3,07,049	44.22

साक्षरता दर (Literacy Rate)

कोटा शहर की औसत साक्षरता दर 83.65% है, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 90.56% हतथा महिला साक्षरता दर 75.90% हैं।

लिंगानुपात (Sex Ratio)

कोटा शहर का लिंगानुपात 1000 पुरूषों की संख्या पर 890 महिलाओं का हैं तथा शिशु लिंगानुपात 1000 लड़कों पर 876 लड़कियों का हैं।

औद्योगिक गतिविधियाँ

कोटा शहर राजस्थान ''औद्योगिक नगरी'' के रूप में भी जाना जाता रहा हैं। शहर कपास, बाजरा गेहूँ, धनियाँ और तिलहन के लिए वृहद् व्यापारिक केन्द्र हैं। प्रमुख उद्योगों में कपास और तिलहन मिलिंग, कपड़ा बुनाई, डेयरी, हेन्डीक्राफ्ट निर्माण और 'कोटा स्टोन' के नाम से पत्थर पॉलिश का उद्योग प्रमुख हैं।

बड़े उद्योगों में –

1. चम्बल फर्टिलाईजर्स एण्ड केमिकल लिमिटेड
2. सेमटेल ग्लास लिमिटेड़
3. श्रीराम फर्टिलाईजर्स एण्ड मेटल इण्डिया
4. श्रीराम रेयोन्स
5. राजेन्द्र इन्जिनियरिंग वर्क्स, कोटा
6. श्रीराम कन्सोलिडेटेड लिमिटेड

शोध कार्य की समीक्षा (Review of Literature) : -

ई. असामीन, एच.ई. ईशा और जे.एम. महेश (2007) ने ''ईरान के जेहदान शहर के नगरीकरण के आप्रवासन (आने वाले प्रवासी)'' का अध्ययन किया। इस शहर में आने वाले अप्रवासियों के कारण शहर का अनियोजित विकास हुआ, जिस कारण शहर में अने समस्याऐं उत्पन्न हुई जिसमें पीने के पानी की कमी, जल–मल निकास की समस्या, आधारभूत ढ़ाँचे का अभाव आदि हैं। नगर में आर्थिक व सांस्कृतिक विविधता के कारण मलिन बस्तियों का विकास हुआ हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography) -

1. **Farooq, S. & Ahmed, S.** : "Urban Sprawl Development Around Aligarh City : A Study Aided By Setllite Remote Sensing And GIS", Journal of The Indian Society of Remote Sensing, Vol. (36) PP . 77-88, 2008.

2. **Hussain Ahmed** : "Population Geography", Vishvabharti Publication, 4378/4 B, Ansari Road, New Delhi.

3. **James, H.E.** : "Urban Geography of India" Bulletin of The Geographical Society of Philadelphia, Vol-28, 1930.

4. **Jayarajun, N.** : "Land Use Planning From Parts of South & **Abduallah Khan, P.** India Using Remote Sensing and GIS : Implication to Natural Resources Assessment," Advances in Soil Classification Book,, Part — 2, 2011.

5. **Kurni,M.S** : "Urban Growth And It's Impact on Environmental in Belgaum City," Karnataka University, Dharwad. 2008. :

6. **Kulkarni, K.M** : "Urban Structure And Interaction : A Study of Nasik City — Region", Concept Publication Company, New Delhi, 1981. :

7. **Latkar, S.R.** : Nasik City : A Study Of It's Urban Sprawl In : Dikshit, L.K. (Eds.), The Urban Fringe Of Indian Cities Rawat Publication, Jaipur, 2011.

8. **Mohammad, N** : "Urbanisation, Slum and Social Conflicts a Study of Slum In Kanpur City", Abstract Paper," Nehu, Shillong, 1987.

9. **R. Kaur** : "Urban Rural Relation: A Geographical Analysis", Anmol Publication Pvt. Ltd., India, 1995.

10. **Saravanm, P., Padmasri, S. & Lakshmi, K** : "Urban Sprawl and it's Transformation Over Land Use / Land Cover Using Geo — Informatics : A Case Study on Maduri Fringe Area", Bonfringe International Journal of Industrial Engineering and Management Science Vol. (2), PP. 41 — 45, 2012.

11. **Sharma, K.D.** : "Urban Development in the Metropolitan Shadow: A Case Study From Haryana," Inter — India Publication, New, Delhi, 1985.

12. **Varma, L.N.** : "Urban Geography" Rajasthan Hindi Granth Akadamee, Jaipur, 1983.

13. **Wolman, M.G. & Fournier, G.A.** : "Land Transformation in Agriculture Johan Wiley and Sons," Chichester, UK, 1987

Corresponding Author
* प्रियंका पंवार *(व्याख्याता भूगोल)*
रा.उ.मा.वि. बड़गांव कोटा
डॉ. हनीफ खान *(सहायक प्रोफेसर)*
केरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय कोटा
Email-tanwaranuradha9@gmail.com, Mobile-9468739628